

लोग क्या कहेंगे

पहले दिन हसेंगे

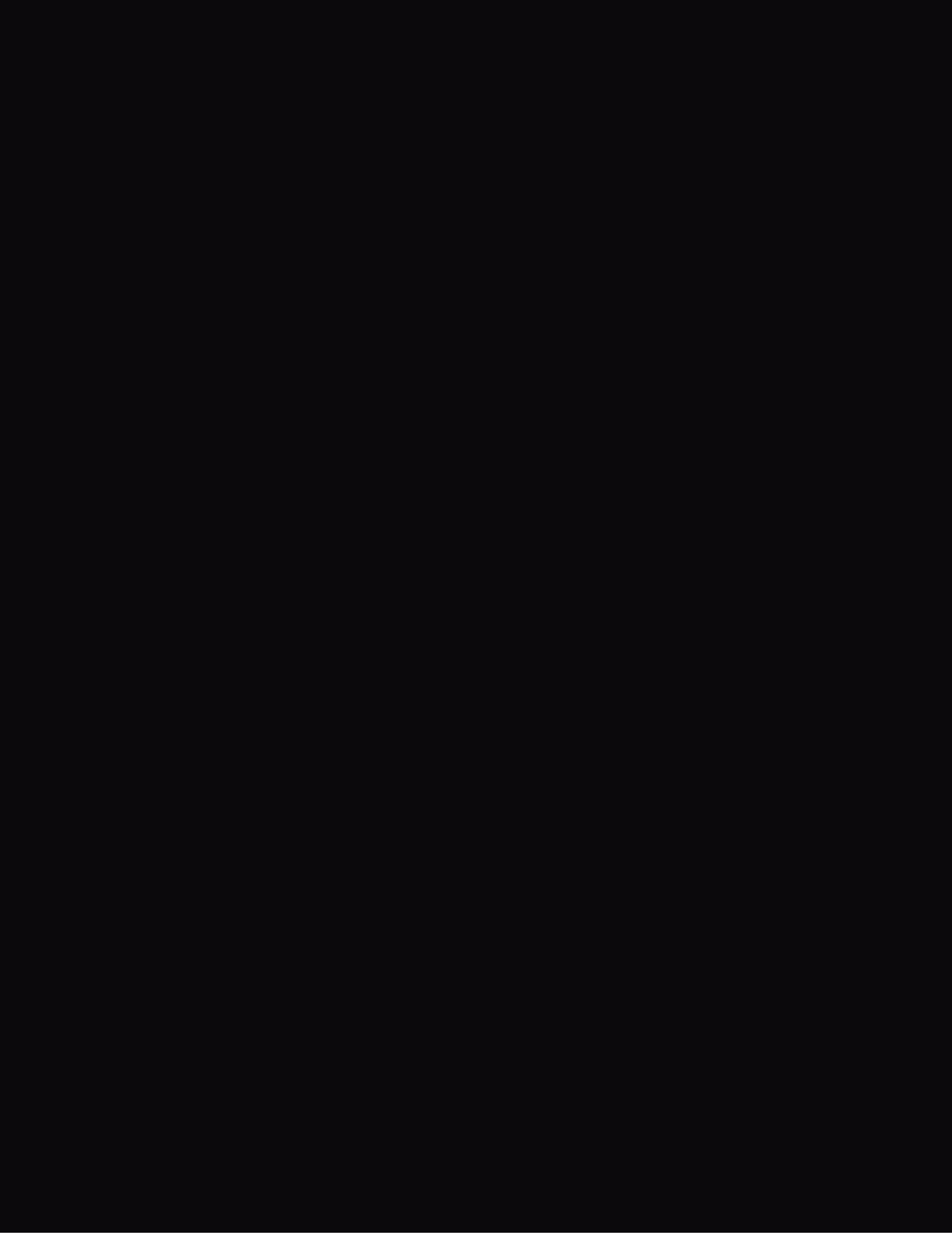
दूसरे दिन मजाक बनाएंगे और

तीसरे दिन भूल जाएंगे

इसलिए लोगो की परवाह मत करो , वो करो

जो तुम चाहते हो, जिसमे तुम खुश हो

याद रखना ये जिंदगी तुम्हारी है लोगो की नही





SECRET OF MIND

When mind is weak, **situation** is a **problem**.

When mind is balanced, **situation** is **challenge**.

When mind is strong, **situation** becomes an **opportunity**.

Good Morning



**ऐसा आदमी बनो जिसकी जेब में पैसा
हो, दिमाग में ज्ञान हो, दिल में दया हो,
चेहरे पर आत्मविश्वास हो और आत्मा**

Follow// Ramesh Kumar

में जिम्मेदारी हो!!



दुनियादारी छोड़ कर अपने

"लक्ष्य" के पीछे भागो..

लोगों का सिर्फ वक़्त आता है

तुम्हारा दौर आयेगा..!!



Good Morning...

सलाह हारे हुए की,
तजुर्बा जीते हुए का और दिमाग
खुद का इंसान को कभी हारने
नहीं देता...

सुप्रभात!

Sxn7india



ख़ामोश रहना" सिखाते हैं
अक्सर वो ही लोग,

जिनसे हम बहुत बातें
करना चाहते हैं !

अहसास-ऐ-ज़िन्दगी





अपने वित्तीय साम्राज्य का निर्माण

अपना वित्तीय साम्राज्य बनाना केवल धन इकट्ठा करना नहीं है; यह दीर्घकालिक वित्तीय सफलता के लिए एक ठोस आधार तैयार करने के बारे में है। यह एक मजबूत महल बनाने जैसा है, लेकिन पैसे से।

सबसे पहले, महत्वाकांक्षी लेकिन प्राप्त करने योग्य वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करके शुरुआत करें। यह आपको लक्ष्य करने के लिए एक स्पष्ट लक्ष्य देता है।

इसके बाद अपने धन का बुद्धिमानी से प्रबंधन करके एक ठोस आधार तैयार करें। इसका तात्पर्य है बजट बनाना, बचत करना और समझदारी से निवेश करना।

अपनी आय के स्रोतों में विविधता लाएँ। आय के केवल एक स्रोत पर निर्भर न रहें। धन कमाने के विभिन्न तरीकों का पता लगाएँ, जैसे—कोई अतिरिक्त व्यवसाय शुरू करना या स्टॉक्स में निवेश करना आदि।

सीखते रहें और अपने वित्तीय ज्ञान में सुधार करें। जितना अधिक आप जानेंगे, अपने धन के संबंध में आप उतने ही बेहतर निर्णय ले सकेंगे।

ध्यान केंद्रित और लगातार बने रहें। अपने वित्तीय साम्राज्य के निर्माण में समय और परिश्रम लगता है; लेकिन दृढ़ संकल्प के साथ आप वित्तीय सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

SAMRAJY
PATRIKI



28

समय-प्रबंधन के अनमोल रत्न

1. ईश्वर की इस विलक्षण सृष्टि में आपके पास उपलब्ध प्रतिदिन के चौबीस घंटे का समय ही सबसे मूल्यवान संसाधन है।
2. समय उन चार बहुमूल्य वस्तुओं में से एक है, जिन्हें आप कितना भी प्रयत्न करने पर, किसी भी कीमत पर, दोबारा नहीं पा सकते—
 1. आपको प्राप्त जीवन।
 2. आपके द्वारा बोले गए शब्द।
 3. आपके द्वारा खोए हुए अवसर।
 4. आपके पास उपलब्ध समय।
3. समय का नियंत्रण लगभग असंभव है। आप केवल अपने आपको व अपने कार्यों को सुव्यवस्थित करके समय का सदुपयोग कर सकते हैं।
4. प्रत्येक व्यक्ति को 24 घंटे का समय समान रूप से उपलब्ध है।
5. सफलता प्राप्त करने के लिए एक निश्चित समय में आपको अपनी गतिविधियों का नियमन करना अत्यंत आवश्यक है।
6. समय का मूल्यांकन करके उसका सदुपयोग करना ही बुद्धिमानी है।
7. अपने समय का प्रभावी एवं कुशल प्रबंधन करने के लिए योजना बनाकर केवल उत्पादक कार्यों में ही समय का सदुपयोग कीजिए।
8. समय को व्यर्थ नष्ट न कीजिए। गपशप में समय बरबाद करने के विपरीत मूल्य संवर्धित एवं आत्म-विकास संबंधी बातों पर ध्यान दीजिए।
9. समय का सदुपयोग करने के लिए सदा ही नियमित एवं अनुशासित दिनचर्या अपनाना श्रेयस्कर है।



कदम-5 : अपने त्याग को स्पष्ट करें



“आप क्या चाहते हैं, यह जानने का आधा हिस्सा यह होता है कि उसे पाने से पहले आपको क्या छोड़ना होगा!”

—सिडनी हॉवर्ड

किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत विकास के लिए त्याग की आवश्यकता होती है। यह त्याग अनेक रूपों में सामने आता है। कभी-कभी इसमें आपके कंफर्ट जोन से बाहर निकलना भी शामिल होता है।

कभी-कभी इसमें आपकी सहन-शक्ति या सहनशीलता की तय की गई सीमा से परे जाना शामिल होता है। यह आह्वान करता है कि आप डटे रहें और हार न मानें। अंत में यह आपसे अपेक्षा करता है कि आप दूरगामी बड़े लाभों को पाने के लिए थोड़े समय के सुखों को त्याग देंगे।

बचपन में हम में से अधिकांश को सिखाया जाता है कि हमें अपने प्रयासों में सफल होने के लिए 'त्याग और तप' करना होगा। हमें यह पता चलता है कि कुछ छोड़ने और सफल होने के बीच कारण एवं परिणाम का एक संबंध है। विश्व स्तरीय एथलीट को प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए बलिदान देना होगा। एक सफल व्यवसाय खड़ा करने के लिए उद्यमी को त्याग करना होगा। शानदार प्रदर्शन करने वाले छात्र को बहुत अधिक अंक पाने के लिए त्याग करना होगा।



जैसी संगत वैसी रंगत

सोच को प्रभावित करने में संगत की भूमिका महत्वपूर्ण है। हमारी जैसे व्यक्तियों के साथ संगत होती है, वैसी ही हमारी सोच होती है। अर्थात् संगत के अनुरूप ही हमारी सोच अच्छी या बुरी होती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जैसे व्यक्तियों के साथ संगत होगी, वैसी ही हमारी सोच होगी और जैसे व्यक्तियों के साथ संगत होगी, वैसी ही हमारी सोच होगी। कहने का अभिप्राय है कि सोच और संगत एक-दूसरे के पूरक हैं। कहा भी गया है- 'जैसी संगत वैसी रंगत' अर्थात् अच्छी संगत अच्छी सोच और बुरी संगत बुरी सोच। आप खुद को किस रंग में रंगना चाहते हैं, यह आपकी सोच एवं संगत पर निर्भर करता है। यदि आप खुद को अच्छी सोच के रंग में रंगना चाहते हैं तो अच्छे लोगों की संगत करें, अन्यथा आप गलत संगत में रहकर गलत सोच, गलत कर्म और गलत आदतों के शिकार हो जाएँगे।

आपको ऐसे अनगिनत उदाहरण मिल जाएँगे, जो शुरू में अच्छे थे, लेकिन बाद के दिनों में वे गलत लोगों की संगत में पड़कर चोर, डाकू, लुटेरे, शराबी बन गए। उनका जीवन जीना दुश्कर हो गया और बाद में चाहकर भी वे बुरी आदतों को छोड़ नहीं पाए। आपको ऐसे भी लोग मिलेंगे, जो पहले डाकू, चोर, शराबी और जुआरी थे, परंतु बाद के दिनों में वे अच्छे लोगों की संगत कर, संत और महात्मा बन गए।



कठिन कुछ नहीं होता

“मुश्किलें वे सीढ़ियाँ हैं, जिनसे
सफलता की ऊँचाइयों पर चढ़ा जाता है।”

जीवन में कभी-कभी चुनौतियाँ इतनी कठिन लगती हैं कि हम हार मानने के करीब होते हैं। परंतु यदि हम इन कठिनाइयों को अवसरों के रूप में देखें, तो असंभव को भी संभव बना सकते हैं। हर व्यक्ति के जीवन में संघर्ष का समय आता है। लेकिन जो लोग अपनी आत्मशक्ति और आत्मविश्वास को कायम रखते हैं, वही सफलता प्राप्त करते हैं। कठिनाइयों को पार करने के लिए धैर्य और साहस की आवश्यकता होती है और यह समझने की कि असफलता अंत नहीं बल्कि एक नई शुरुआत है।



अपने सामाजिक संबंध को बेहतर करने के कुछ तरीके

- हमेशा दूसरों के प्रति विनम्र रहें ।
- अपने पद पैसा, या किसी और चीज का घमंड न करें ।
- हमेशा दूसरों की मदद करें, जरूरतमंदों की मदद करें ।
- आसपास के लोगों को अच्छे काम के लिए प्रेरित करें ।
- कभी किसी के साथ गलत व्यवहार न करें ।
- सामाजिक कार्यों में अपनी उपस्थिति दर्ज करें ।
- सामाजिक संबंध को बेहतर करने का सबसे अच्छा तरीका है खुद के विचार एवं व्यवहार को बेहतर करना ।



सुबह जल्दी उठें



सुबह जल्दी उठने की आदत एक तोहफ़ा है जो आप अपने आपको देते हैं। कुछ नियम आपके जीवन को एक नया रूप दे देते हैं उनमें से एक है जल्दी उठने का नियम। प्रातःकाल के कुछ प्राथमिक घण्टे अपने आप में विशिष्ट होते हैं। ऐसा लगता है कि समय मध्यम गति से बढ़ रहा है और शान्ति की महान भावना जैसे आपके वातावरण में भर जाती है। अगर आप '5 बजे की महफिल' में शामिल जाएंगे तो यह आपको अपने दिन का नियन्त्रण लेना सिखाएगा बजाए इसके कि दिन आपको नियन्त्रित करने लगे। 'विस्तर के साथ जंग' को जीतकर, 'मन को गद्दे' के मजे से ऊपर लाकर, और जल्दी उठकर आप अपने आपको कम से कम एक घण्टे की शान्ति का समय दे सकते हैं जो अत्यन्त महत्पूर्ण है और वह है दिन की शुरुआत। अगर समझदारी से बिताया जाए तो बाकी दिन अपने आप में अद्भुत होगा।



चिंता इतनी कीजिए की
काम हो जाए,
पर इतनी नहीं की जिंदगी
तमाम हो जाए,
मालूम सबको है कि
जिंदगी बेहाल है,
लोग फिर भी पूछते हैं और
सुनाओ क्या हाल है।

तनाव से निपटने के व्यावहारिक उपाय

आपकी परिस्थितियों के अनुसार, निम्नलिखित सुझाव आपके लिए काम कर भी सकते हैं और नहीं भी। इनमें से कुछ बिल्कुल आपकी स्थिति के अनुसार बनाए गए लग सकते हैं, जबकि अन्य काम के नहीं हो सकते। देखने वाली बड़ी बात यह है कि अपने तनावकर्ताओं से निपटने और उनके प्रभाव को कम-से-कम करने की शक्ति एवं क्षमता शायद आपके पास है।

तनावकर्ता को लेकर अपनी धारणा पर प्रश्न करें—अगर कुछ है, जो आपको तनाव दे रहा है तो खुद से पूछें कि ऐसा क्यों है? क्या आपकी परिस्थिति ऐसी है कि तत्काल ध्यान दिया जाए? क्या इतना तत्काल है, जितना दिख रहा है? या आपका मस्तिष्क अनावश्यक रूप से अलार्म बजा रहा है? उदाहरण के लिए, मान लीजिए, कल आपकी परीक्षा है। आपका दिमाग आपको हाई अलर्ट पर रख रहा है, लेकिन आपकी तैयारी संभव है कि हो चुकी है।

काम बाँट दें—अगर काम का आपका बोझ बहुत अधिक है तो खुद से पूछें कि क्या किए जाने वाले कामों की सूची में सारे कामों की जिम्मेदारी आपकी ही है। क्या कुछ काम और दूसरों को दे सकते हैं? क्या आप उन्हें दूसरों से करवा सकते हैं? ऑफिस में ऐसा ही करें (शायद आपका कोई सहकर्मी आपके एक-दो काम निपटा दे)। घर पर ऐसा करें (शायद आपके बच्चे आपके कुछ काम कर दें)।

अपना माहौल बदलें—दफ्तर का घुटन भरा माहौल भारी तनाव पैदा करता है। घर का माहौल भी खराब हो तो उतना ही तनाव होता है। खुद से पूछें कि क्या आपके पास ऐसे माहौल में रहने की मजबूरी है? क्या आप ऐसी नौकरी हासिल कर सकते हैं, जहाँ आपके बॉस एवं सहकर्मी और अधिक मददगार हों? क्या आप अपने रहने के माहौल को बदलकर कमरे के बुरे साथियों या परिवार के चालबाज सदस्यों से दूर जा सकते हैं?

माइंडफुलनेस ध्यान का अभ्यास करें—ध्यान लगाने को लोग अच्छा नहीं मानते हैं; लेकिन ऐसा इस कारण है, क्योंकि ज्यादातर लोग इसे ठीक से समझते नहीं। वे पालथी मारकर बैठे ऐसे व्यक्ति की कल्पना करते हैं, जो हाथों की उँगलियों को इस प्रकार फैलाए हुए है कि तर्जनी व अँगूठा एक-दूसरे को स्पर्श कर रहे हों। शायद पीछे से कोई घंटा बज रहा हो या शायद पानी बह रहा हो या मंत्रों का जाप किया जा रहा हो। सच यह है कि इस विषय पर पर्याप्त शोध हुआ है, जो बताता है

अपनों का साथ

“अपनों का साथ जीवन को सँवारता है
और कठिनाइयों को हल्का करता है।”

अपनों का साथ हमें यह एहसास दिलाता है कि हम अकेले नहीं हैं। हमेशा कोई न कोई है जो हमारी परवाह करता है और हमारे लिए हमेशा मौजूद रहता है। यह विश्वास ही हमें जीवन की हर मुश्किल का सामना करने की ताकत देता है।

हम बिना किसी झिझक के अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं। वे हमें हमेशा प्रोत्साहित करते हैं और हमें हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। कठिन समय में, वे हमें संभालते हैं और हमें उम्मीद देते हैं। खुशियों के पल में, वे हमारे साथ जश्न मनाते हैं और हमारी खुशियों को दोगुना कर देते हैं।



जब बात आ जाए आत्मसम्मान पर
तो आवाज उठाना जरूरी है

जब ना करे कद्र कोई...
तो दूरी बना लेना जरूरी है

कब तक झुकते रहे हम
किसी के अपमान के आगे

खुद की सम्मान के लिए कभी कभी
हतराज जताना जरूरी है....

||i am prince391



ना जाने किस मोड़ पर आ गई है जिंदगी, ना ही आगे बढ़ा जा रहा है ना ही पीछे मुड़ा जा रहा है, ना ही खुलकर मुस्कुराया जा रहा है ना ही खुलकर रोया जा रहा है...

धीरे-धीरे मेरी हर चीज से इच्छाएं खत्म होती जा रही है, अब तो खुद की हालत देखकर ऐसा लगता है कि मेरे अंदर का वो मौज मस्ती करने वाला इंसान मर चुका है...

मेरे अंदर अब किसी को चाहने की मिन्नते करने की समझाने की हिम्मत ही नहीं रही अब जो जैसा समझे वही ठीक है...

अब किसी से उलझने का किसी को सफाई देने का दिल नहीं करता है, अब लोगों से दूर अकेले रहने का दिल करता है... 😊😊



11K





जिंदगी जो शेष
है, वो विशेष
है...

शुभप्रभात.



मजबूत होने में मजा ही तब है,
जब सारी दुनिया
कमजोर कर देने पर तुली हो..!





एक दिन आप उस स्थान पर होंगे जहां
आप हमेशा रहना चाहते थे **विश्वास** करना
बंद ना करें ।



सुनना और समझना जरूरी है

दूसरों के विचारों को ध्यानपूर्वक सुनने का मतलब यह भी होता है कि आप उनकी बातों को समझने के लिए उनसे सवाल भी करें। इससे यह साबित होता है कि आप उनके विचारों में पूरी तरह शामिल हैं। हाँ, ध्यान रहे कि वे सवाल उनके विचारों को और भी ज्यादा स्पष्टता प्रदान करनेवाले हों, न कि उनके विचारों की धजियाँ उड़ानेवाले। जब आप उनके मामले से जुड़े सवाल पूछेंगे तो वे आपको समझाने के लिए और भी नवाचारी तर्क पेश करेंगे। भले ही आप उनकी बातों को पहले से जानते-समझते हों, फिर भी उन्हें पूरी तरह अपनी बातें रखने का मौका दें। और, जब कोई फैसला सुनाएँ तो उन्हीं की बातों व तर्कों को उसका आधार बनाएँ।

इस तरह आप उन्हें यह एहसास करा पाते हैं कि आप उन पर कोई अपनी बात नहीं थोप रहे हैं, बल्कि उन्हें ही फैसला करने का मौका दे रहे हैं। इस तरह, जब आप उनका आदर करने की कोशिश करते हैं तो उनके मन में भी आपके प्रति कई गुना अधिक आदर की भावना प्रकट होती है। यदि आप किसी कार्य-समूह की बैठक ले रहे हों और उसमें कोई चुपचाप बैठा हो तो उसके विचारों का द्वार खोलने के लिए उससे संबंधित कोई निश्चित सवाल करें। याद रहे कि उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए कोई व्यंग्यपूर्ण सवाल न करें, जिससे कि उसकी भावना को कोई ठेस पहुँचे।

हर एक **Successful** इंसान के पीछे
कोई **हो** या न हो, लेकिन उसकी **अपनी**
ज़िद और **ईमानदारी** ज़रूर होती हैं।

भाग्यशाली वे नहीं होते
जिन्हें सब कुछ अच्छा मिलता है,
बल्कि वे होते हैं जिन्हें जो मिलता है,
उसे वो अच्छा बना लेते हैं।

चलने वाले पैरों में
कितना फर्क होता है।

एक आगे तो एक पीछे
लेकिन न तो आगे वाले को
अभिमान होता है और
न ही पीछे वाले का अपमान
क्योंकि उन्हें पता होता है कि
कुछ ही समय में यह स्थिति
बदलने वाली है,

इसी को जीवन कहते हैं।



चरित्र :

चट्टान की तरह दृढ़ बनें

नेतृत्व लोगों को किसी साझे लक्ष्य की दिशा में एकजुट करने की क्षमता और इच्छा है... साथ ही, यह दृढ़ चरित्र भी है, जो लोगों में विश्वास जगाता है।

- बरनार्ड मॉन्टगोमेरी,

अंग्रेज़ फ़ील्ड मार्शल

“क्षणिक शांति या राहत पाने की खातिर”

अपने खुद के अनुभव या विश्वासों को कभी मत नकारो।

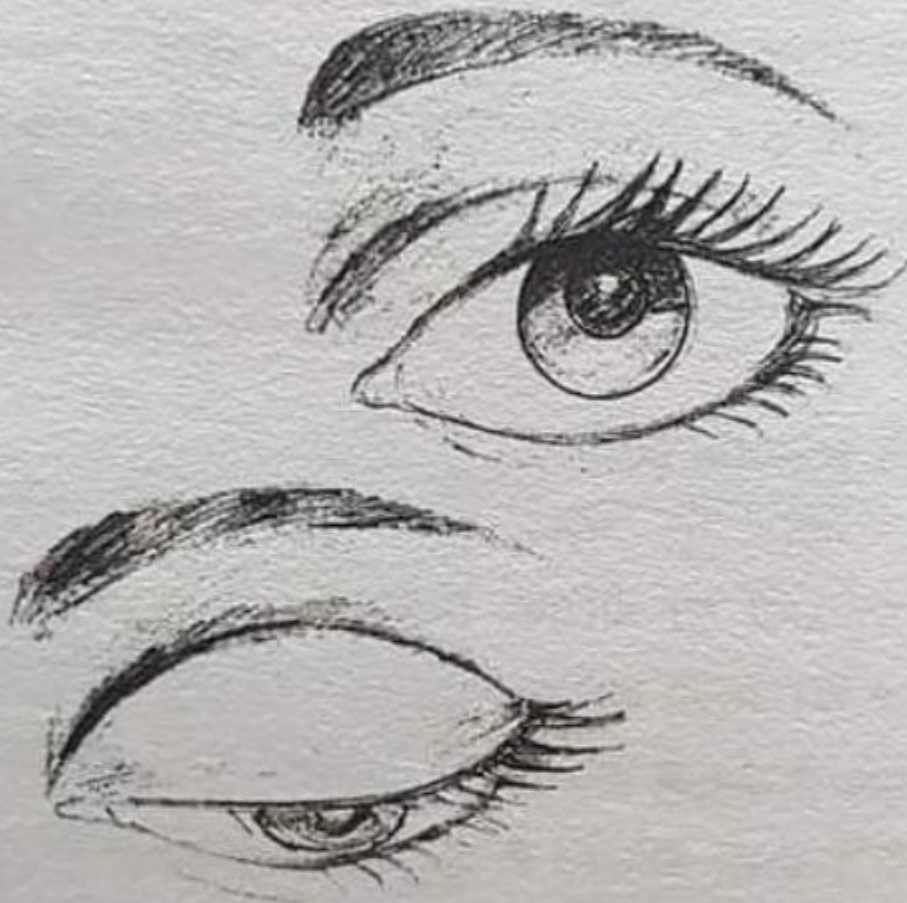
- डग हैमरस्कॉल्ड,

कूटनीतिज्ञ और नोबल शांति पुरस्कार विजेता



● भारी पलक

जिनकी पलकें भारी होती हैं, वे हैरान, परेशान, चिंताग्रस्त और जीवन की अनियमितताओं से घिरे होते हैं। अपनी परेशानियों से हमेशा जूझते रहते हैं। उनका स्वभाव चिड़चिड़ा व रूखा होता है।



● पतली पलक

जिनकी पलकें पतली होती हैं, वे बड़े खुशनुसीब होते हैं। उनका जीवन काफी सुखी होता है। वे धनवान व सुखी-संपन्न होते हैं।

● छोटी पलक

छोटी पलकवाले कमजोर और बीमार प्रवृत्ति के होते हैं। उनका स्वभाव शांत व सहनशील होता है। अपनी बात को किसी के सामने कहने से डरते हैं।

“एक विचार लो। उस विचार को अपना जीवन बना लो। उसके बारे में सोचो। उसके सपने देखो, उस विचार को जियो। अपने दिमाग, मांसपेशियों, नसों, शरीर के हर हिस्से को उस विचार में डूब जाने दो और बाकी सभी विचार को किनारे रख दो। यही सफल होने का तरीका है” - स्वामी विवेकानंद

आपकी सोच, सबसे बड़ी ताकत है

हर सुबह जब आप जागते हैं तो एक नई दुनिया आपके सामने खुलती है। यह दुनिया आपके विचारों से बनी है जिसमें संभावनाओं का असीम आकाश है। लेकिन क्या हो अगर मैं आपको बताऊँ कि इस असीम आकाश में उड़ान भरने की कुंजी आपके अपने मन में ही छिपी है?

सोच ही हमारी भावनाओं का मूल कारण है। जब भी आप अपने मन में किसी नकारात्मक विचार को आने देते हैं। तब वह एक छोटा सा बीज होता है जो जल्द ही एक विशाल पेड़ का रूप ले लेता है। इसकी जड़ें आपके मन की गहिराई को हिलाने लगती हैं। लेकिन याद रखिए, यह पेड़ भी आपकी ही दी हुई खाद-पानी से बढ़ता है।



समय पत्रिका

“कहानी हर किसी की शुरू होती है,
मगर खत्म होने के लिए”

जीवन के रंग

“जैसे-जैसे वस्तुएँ पुरानी होती जाती हैं, वे क्षीण भी होने लगती हैं
और यहीं से उनका अंतिम अध्याय शुरू होता है”

बूढ़ी काकी कहती है—‘जीवन के रंग एक से नहीं होते। बहुत उतार-चढ़ाव होते हैं, बड़ी फिसलन होती है। मामूली कुछ नहीं होता।’

काकी से यह प्रश्न किया तो वह बोली—‘यह सच है कि हम पैदा हुए। यह भी सच है कि हम ज़िंदगी बिताने के लिए जीते हैं। और यह भी सच है कि उम्र बीतती है तो बुढ़ापा आना ही है।’

मैं अपने प्रश्न का उत्तर शायद ही पूरा पा सकूँ क्योंकि सवाल और उत्तर उलझे हुए हैं। मैं पशोपेश में हूँ कि— पैदा, सिर्फ़ बूढ़ा होने के लिए ही होते हैं या पैदा मरने के लिए होते हैं।

“बुढ़ापा सिर्फ़ उम्र का एक अंक नहीं, यह जीवन के अनुभवों का संग्रह है।
जो हमें एक अनोखा रंग देता है।”

काकी थोड़ा हँसती है, कहती है—‘यह नियम है कि जो उत्पन्न हुआ है, वह समाप्त भी होगा। जैसे-जैसे वस्तुएँ पुरानी होती जाती हैं, वे क्षीण भी होने लगती हैं और यहीं से उनका अंतिम अध्याय शुरू होता है। कहानी हर किसी की शुरू होती है, मगर खत्म होने के लिए। हम उन्हीं वस्तुओं में से हैं जो उम्र के बढ़ने के साथ ही क्षीण हो रही हैं।’

‘समय के बीतने के बाद किसी भी चीज़ की कीमत बदल जाती है। शुरूआत से अंत तक का सफ़र मज़ेदार ही रहता हो यह सही नहीं।’



अपनी कमाई की क्षमता को समझना

वित्तीय सफलता के लिए अपनी कमाई की क्षमता को समझना महत्वपूर्ण है। यह मूल रूप से इस बारे में है कि आप अपनी नौकरी या व्यवसाय से कितना पैसा कमा सकते हैं!

कल्पना कीजिए कि आप एक बगीचे की तरह हैं। आपकी कमाई की क्षमता आपके द्वारा बोए गए बीजों की तरह है। जितना बेहतर आप इसे समझेंगे, उतना ही बेहतर आप अपना मनी गार्डन विकसित कर सकेंगे।

सबसे पहले, अपने कौशल और प्रतिभा के बारे में सोचें। आप किसमें अच्छे हैं? आप किस काम को करना पसंद करते हैं? आपकी कमाई की क्षमता अकसर इन चीजों पर निर्भर करती है।

फिर शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर विचार करें। कभी-कभी नई चीजें सीखने से आपकी कमाई की शक्ति बढ़ सकती है। यह आपके बगीचे को अतिरिक्त पानी और धूप देने जैसा है।

आगे, नौकरी बाजार पर नजर डालें। अलग-अलग नौकरियों में अलग-अलग भुगतान होता है। यह विभिन्न प्रकार के फलों की तुलना करने जैसा है—कुछ अन्य की तुलना में अधिक मूल्यवान् हैं।

साथ ही, अनुभव का भी ध्यान रखें। आप जितना अधिक समय तक काम करेंगे, उतना अधिक सीखेंगे और प्रायः उतना ही अधिक कमाएँगे। यह



कभी भी दरिद्र विचारों से संपत्ति पैदा करने की कोशिश न करें —वैलेस वाटल्स

आप तब तक संपत्ति की एक सही और स्पष्ट तस्वीर नहीं बना सकते, अगर आप बार-बार अपना ध्यान उल्टी तस्वीरों की ओर ले जा रहे हैं, चाहे वे बाहरी हों या काल्पनिक।

अपने पैसे के बारे में पुरानी समस्याओं की बातें न करें, अगर आपने उनको झेला हो। उनके बारे में सोचें भी नहीं। अपने माता-पिता की गरीबी और शुरुआती जिंदगी की परेशानियों के बारे में किसी को न बताएँ। ऐसा करते समय आप खुद को गरीबों के साथ जोड़ देते हैं और इससे आपकी सही दिशा में होने वाली प्रगति रुक जाएगी।

‘मृत को अपना सिर कब्र में डालने दो।’ गरीबी और गरीबी से जुड़ी सारी चीजें अपने पीछे छोड़ दें।

अब आपने ब्रह्मांड के एक सिद्धांत को सही माना है और अपनी खुशियों को इसके सही होने पर आश्रित कर रहे हैं। इसके विपरीत सिद्धांतों पर ध्यान देने से क्या फायदा?

वैसी किताबें न पढ़ें, जो बताती हैं कि दुनिया खत्म होने वाली है और उन निराशावादी दार्शनिकों की बातें न पढ़ें, जो बताते हैं कि यह शैतान के पास जाने वाली है। दुनिया शैतान के पास नहीं जा रही, यह भगवान के पास जा रही है।

सही है, वर्तमान परिस्थितियों में कई अच्छी चीजें हो सकती हैं, जो स्वीकार करने लायक न हों; लेकिन उनका अध्ययन करने से क्या लाभ जब वे गुजर रही हैं और उनका अध्ययन करने से वे ज्यादा समय तक टिकी रहेंगी? उन चीजों पर ध्यान और समय देने से क्या लाभ, जो प्रगतिवादी वृद्धि से हटाई जा रही हैं, जब आप उनको हटाने की गति को प्रगतिवाद को समर्थन देकर बढ़ा सकते हैं?

भाग्यशाली वे नहीं होते
जिन्हें सब कुछ अच्छा मिलता है,
बल्कि वे होते हैं जिन्हें जो मिलता है,
उसे वो अच्छा बना लेते हैं।

चलने वाले पैरों में
कितना फर्क होता है।

एक आगे तो एक पीछे
लेकिन न तो आगे वाले को
अभिमान होता है और
न ही पीछे वाले का अपमान
क्योंकि उन्हें पता होता है कि
कुछ ही समय में यह स्थिति
बदलने वाली है,

इसी को जीवन कहते हैं।



सही समय चुनना

हर गाड़ी का अपना समय होता है

क्या कभी-कभी आपको यह महसूस होता है कि आपका जीवन बहुत बिखरा-बिखरा सा है? या यह कि आपकी व्यस्तताएँ इतनी अधिक बढ़ गई हैं कि आपको साँस लेने की भी फुर्सत नहीं मिल रही? या फिर यह कि आपकी ज़िम्मेदारियाँ इतनी अधिक हो गई हैं, लोगों की आपसे इतनी उम्मीदें बँध गई हैं कि उनके बोझ के चलते आपके जीवन की गाड़ी डाँवाडोल हो रही है?

यदि इन तीन प्रश्नों में किसी एक का भी उत्तर आप 'हाँ' में देते हैं तो शायद आप अपने समय का सही प्रबंधन नहीं करते। और इससे आपका वित्तीय-प्रबंधन भी असंतोषजनक हो जाता है क्योंकि समय और पैसे का आपस में बहुत करीब का सम्बन्ध है; उस अंग्रेजी कहावत को याद करें - टाइम इज़ मनी, अर्थात् समय धन है।



सकारात्मक नज़रिया :

अगर आपको यकीन है कि आप कर सकते हैं, तो आप सचमुच कर सकते हैं

मेरी पीढ़ी की महानतम खोज यह है कि अपने मानसिक नज़रिए को बदलकर मनुष्य अपना जीवन बदल सकता है।

- विलियम जेम्स, मनोवैज्ञानिक

सफल व्यक्ति वह है, जो दूसरों द्वारा खुद पर फेंकी गई ईंटों से एक ठोस नींव रख सकता है।

- डेविड ब्रिंकले, टेलीविज़न पत्रकार



कभी ना कहो की दिन अपने खराब है।
समझ लो की हम काँटों से घिर गए गुलाब है।।

"रखो हौंसला वो मंज़र भी आयेगा;
प्यासे के पास चलकर समंदर भी आयेगा।।
थक कर ना बैठो, ऐ मंजिल के मुसाफ़िर;
मंजिल भी मिलेगी और जीने का मजा भी
आयेगा।।"



आभार व्यक्त करना सीखें

अपने स्कूल के बारे में शिकायत करने से पहले याद रखें,
बहुत से लोग शिक्षा से वंचित होते हैं।

मोटे होने की शिकायत करने से पहले याद रखें,
बहुत से लोगों को खाना भी नहीं मिलता।

अपने काम को लेकर शिकायत करने से पहले याद रखें,
बहुत से लोग कुछ पैसों के लिए तरसते हैं।

घर में सफाई को लेकर शिकायत करने से पहले याद रखें,
बहुत से लोगों के सिर पर छत भी नहीं होती।

बरतनों को धोने के लिए शिकायत करने से पहले याद रखें,
बहुत से लोगों को साफ पानी भी नहीं मिल पाता।

इन सब चीजों के बारे में अपने स्मार्ट फोन का इस्तेमाल करते हुए
सोशल मीडिया पर शिकायत करते हुए याद रखें,
जरा सोचें कि आप कितने नसीबवाले हैं, तो

एक क्षण रुककर जो आपके पास है, उसके लिए शुक्रिया अदा करें।



भूल कर फ़िक्र ज़माने की
थोड़ा अपने लिए भी सोचा करो,
चार लोगों की सुनने से पहले
अपने दिल की भी सुना करो,
जो देता हो तुम्हें सुकून,
कभी वो भी कर लिया करो,
दूसरों को तो देते हो वक़्त, कभी...
अपने लिए भी निकाल लिया करो।।





ऑथर

डॉ.सोमप्रकाश सिंह